शिक्षक-अभिभावक संघ

शिक्षक–अभिभावक संघ का गठन स्थापना काल से ही है। प्रतिवर्ष 2 अक्टूबर एवं 26 जनवरी को शिक्षक–अभिभावक संघ की बैठक की तिथि घोषित है। 2 अक्टूबर को शिक्षक–अभिभावक संघ का प्रतिवर्ष गठन होता है। अभिभावकों के सुझाव पर महाविद्यालय गहनतापूर्वक विचार करता है और यथासम्भव उन्हें लागू करता है।

बाह्य अकादमिक आडिट

सत्र 2007–08 से बाह्य विषय–विशेषज्ञों को बुलाकर कक्षाओं एवं कक्षाध्यापन का मूल्यांकन कराया जाता है। सत्रवार अब तक निम्न विषय–विशेषज्ञ मूल्यांकन कर चुके हैं–

सत्र	विषय–विशेषज्ञ	तिथि
2007–08	प्रो. शिव शंकर वर्मा	24.08.2007
	प्रो. सूरज लाल श्रीवास्तव	26.11.2007
2008–09	प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त	03.11.2008
	डॉ. विवेक निगम	03.11.2008
2009–10	प्रो. बी.के. श्रीवास्तव	01.12.2009
	डॉ. आनन्द शंकर सिंह	01.12.2009
	प्रो. एस.सी. बोस	01.12.2009
	डॉ. डी.पी.एन. सिंह	01.12.2009
2011–12	डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय	16.10.2012
	प्रो. ईश्वर दास	04.11.2012
	डॉ. राणा प्रताप चन्द	04.11.2012
2012–13	डॉ. योगेन्द्र पाल कोहली	09.10.2012
	डॉ. डी.पी.एन. सिंह	19.11.2012
2013–14	डॉ. मुन्नू लाल यादव	09.10.2013
	डॉ. कैलाश सिंह	09.10.2013
	डॉ. राणा प्रताप चन्द	28.01.2014
	श्री रोहिताश्व श्रीवास्तव	28.01.2014
2014–15	डॉ. मया शंकर सिंह	02.09.2014
	प्रो. ईश्वर दास	02.09.2014
2015–16	डॉ. बलवान सिंह	24.08.2015

आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चियन प्रकोष्ठ

महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

(प्रायोगिक विषयों के आन्तरिक/बाह्य परीक्षकों द्वारा महाविद्यालय की गुणवत्ता का मूल्यांकन)

नाम परीक्षक.................................विषय.................................दिनांक...............

विश्वविद्यालय/महाविद्यालय.................................

प्रायोगिक परीक्षक, आन्तरिक ☐ बाह्य ☐ कक्षा.................

1. सम्बन्धित विषय के प्रायोगिक पाठ्यक्रमानुसार महाविद्यालय में सभी प्रयोग कराए गये ☐
   अधिकांश कराए गये ☐ 50 प्रतिशत अथवा उससे कम कराए गये ☐
2. प्रयोगशाला में पाठ्यक्रम के सभी प्रायोगिक उपकरण हैं ☐ अधिकांश हैं ☐
   50 प्रतिशत से कम उपकरण हैं ☐
3. यदि कोई प्रायोगिक उपकरण अथवा सामग्री नहीं है तो उसका विवरण.................................
4. महाविद्यालय में प्रायोगिक परीक्षा के सन्दर्भ में सुझाव.................................
5. परीक्षार्थियों की गुणवत्ता सुधार हेतु सुझाव.................................
6. प्रायोगिक कक्षाओं हेतु आपके सुझाव.................................

---------------------X---------------------

हमारी निम्न योजना पर आपकी राय

1. विद्यार्थियों द्वारा साप्ताहिक कक्षाध्यापन.................................
2. विद्यार्थियों की प्रगति आख्या.................................
3. विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा.................................
4. विद्यार्थियों का प्रशासन में सहभाग (प्रवेश समिति, नियन्ता मण्डल, पुस्तकालय समिति, प्रयोगशाला समिति, क्रीड़ा समिति में सदस्य).................................
5. विद्यार्थियों द्वारा शिक्षकों का प्रतिपुष्ट प्रपत्र के माध्यम से मूल्यांकन (प्रतिपुष्ठि प्रपत्र संलग्न).......
6. महाविद्यालय के बारे में.................................

हस्ताक्षर.................

आग्रह

महोदय, उपर्युक्त प्रपत्र भरने में आपको असुविधा होगी। किन्तु आपके सुझाव मेरे एवं महाविद्यालय की गुणवत्ता में विकास हेतु अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इस प्रपत्र के माध्यम से आपके सुझाव द्वारा प्राप्त सहयोग के हम आजीवन कृतज्ञ होंगें। यदि आप चाहे तो इसे बन्द लिफाफे में दे सकते है। सादर!

प्राचार्य

प्रायोगिक परीक्षकों द्वारा मूल्यांकन

सत्र 2013–14 से प्रायोगिक परीक्षाओं के परीक्षकों का महाविद्यालय की प्रयोगशाला एवं अन्य योजनाओं पर अभिमत लिया जाता है। उन्हें **निर्धारित प्रारूप** भरकर **बन्द लिफाफे** में प्राचार्य को देना होता है। इस योजना द्वारा महाविद्यालय अपना मूल्यांकन करता है।

पुस्तक दान

महाविद्यालय में सत्र **2012–13** से यह योजना लागू की गई। विद्यार्थियों, समाज के प्रबुद्ध–जनों से प्रतिवर्ष आग्रह किया जाता है कि वे अपनी पुस्तकें जो उनके लिए उपयोगी न हों, पुस्तकालय को दान दे दें। पुस्तकालय **आभार पत्र** प्रदान करता है जिसमें दान–दाता के पुस्तक का पुस्तकालयी पहचान अंक घोषित रहता है। इस योजना से अनेक बहुमूल्य पुस्तकें प्राप्त हुई हैं। **स्व. डॉ. कुँवर बहादुर कौशिक जी** की सभी पुस्तकें (530) उनके दान–पत्र के अनुसार पुस्तकालय प्राप्त कर चुका हैं। गत सत्र में इस योजनान्तर्गत **47** लोगों/विद्यार्थियों द्वारा **684** पुस्तकें प्राप्त हो चुकी हैं।

प्रमुख पुस्तक दानदाताओं की सूची

• महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज	प्रबन्धक	69
• डॉ. प्रदीप कुमार राव	प्राचार्य	700
• प्रो. निशा मिश्रा	वनस्पति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर	62
• डॉ. डी.पी.एन. सिंह	वनस्पति विज्ञान विभाग, दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर	200
• डॉ. उदय प्रताप सिंह	पूर्व कुलपति, बीर बहादुर पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर	16
• प्रो. राजेश सिंह	अध्यक्ष, राजनीतिशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर	12
• प्रो. प्रताप सिंह	पूर्व अध्यक्ष, उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग	14
• डॉ. यू.पी. सिंह	अ.प्रा. भूगोल, दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर	94
• डॉ. रघुनाथ चन्द	अ.प्रा. प्राचीन इतिहास, दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर	70
• डॉ. शंकर शरण	प्रोफेसर राजनीतिशास्त्र, महाराज सायाजी राव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात	15
• डॉ. विजय शंकर वर्मा	गणित विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर	10
• डॉ. एस.के. श्रीवास्तव	गणित विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर	20
• डॉ. अलका श्रीवास्तव	गणित विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	80
• डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	प्रभारी राजनीतिशास्त्र विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	131
• डॉ. शशिकान्त सिंह	प्रवक्ता, रक्षा अध्ययन, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर	26
• डॉ. सुधीर श्रीवास्तव	प्रवक्ता, वाणिज्य, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर	20
• प्रो.एच.एस. वाजपेयी	प्रभारी, आई.क्यू.ए.सी, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर	30
• डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी	पूर्व संकायाध्यक्ष, पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर	49
• प्रो. महेश कुमार शरण	पूर्व अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास, गया	28
• डॉ. हर्ष कुमार सिन्हा	रक्षा अध्ययन, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर	13
• डॉ. सत्यपाल सिंह	मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर	07

रक्तदान

महाविद्यालय में रक्तदान को प्रोत्साहित किया जाता है। गुरु श्रीगोरक्षनाथ रक्तकोष के साथ हमारी प्रतिबद्धता है कि वहाँ **जितने यूनिट खून** की आवश्यकता होगी महाविद्यालय पूरा करेगा। हम अपने वचन का सफलतापूर्वक निर्वाह करते चले आ रहे हैं। औसतन **प्रतिवर्ष 50 यूनिट** रक्त हम देते हैं।

समावर्तन संस्कार समारोह

महाविद्यालय की शिक्षा पूर्ण कर चुके स्नातक–स्नातकोत्तर के अन्तिम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए प्रथम बैच से ही समावर्तन संस्कार समारोह के माध्यम से 'भारतीय संस्कृति' के जीवन मूल्यों एवं राष्ट्र–समाज के प्रति आग्रही बनाने का प्रयास जारी है।

समावर्तन उपदेश

सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदितव्यम्। स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्। देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि।

तैत्तिरीय उपनिषद् १.११

''सत्य बोलना। धर्म का आचरण करना। स्वाध्याय में प्रमाद न करना। सत्य से न हटना। धर्म से न हटना। कुशल कार्य में प्रमाद न करना। महान् बनने के सुअवसर से न चूकना। पठन-पाठन के कर्त्तव्य में प्रमाद न करना। देवता और पितरो के कार्य (यज्ञ और श्राद्ध आदि) से प्रमाद न करना। माता को देवी समझना। पिता को देवता समझना। आचार्य को देवता समझना। अतिथि को देवता समझना। अन्यान्य दोष-रहित कार्यों को करना।''

हस्ताक्षर प्राचार्य

संकल्प

मैं ....

पुत्र/पुत्रीश्री/श्रीमती ....

स्नातक/स्नातकोत्तर कला/विज्ञान/वाणिज्य में इस महाविद्यालय से अपनी शिक्षा पूर्ण कर रहा/रही हूँ।

- मैं संकल्प लेता/लेती हूँ कि उपर्युक्त समावर्तन उपदेश का पालन करूँगा/करूँगी।
- जीवन में शुचिता एवं ईमानदारी के साथ पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन के उत्तरदायित्वों का निर्वाह करूँगा/करूँगी।
- मैं भारत का एक योग्य नागरिक बना रहूँगा/बनी रहूँगी। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रति मेरी निष्ठा रहेगी।
- मैं कभी कोई ऐसा कार्य नहीं करूँगा/करूँगी जिससे राष्ट्रीय एकता-अखण्डता को चोट पहुँचे।
- मैं कभी कोई ऐसा कार्य नहीं करूँगा/करूँगी जिससे मेरे माता-पिता तथा सगे-सम्बन्धियों की कीर्ति धूमिल हो।
- भारत की सनातक संस्कृति में मेरी अटूट निष्ठा बनी रहेगी।
- भारतीय जीवन मूल्यों का सम्मान करते हुए उसके संवर्धन हेतु सदैव प्रयत्नशील रहूँगा/रहूँगी और अपने व्यक्तिगत जीवन में उनका पालन करूँगा/करूँगी।

हस्ताक्षर छात्र/छात्रा

दीक्षांत/गोरखपुर

गाउन का विकल्प

प्रार्थना, नशीले पदार्थ मुक्त परिसर समेत कई नवाचारों के लिए चर्चा में रहे महाराणा प्रताप महाविद्यालय ने लीजिए गाउन का भी विकल्प पेश कर दिया. जी वही गाउन, जिसे शैक्षणिक संस्थानों के दीक्षांत समारोहों में पहना जाता है. पिछले साल 2 अप्रैल को भोपाल में एक दीक्षांत समारोह में पर्यावरण मंत्री जयराम रमेश ने जिसे ब्रिटिश औपनिवेशिक गुलामी का प्रतीक बताकर उतार फेंका था. त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक सरकार और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी इससे मुक्ति पर राष्ट्रीय बहस का आह्वान कर चुके हैं. पिछले अक्तूबर में लखनऊ विश्वविद्यालय में पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने भी 'अंगवस्त्रम्' या कोई लखनवी पोशाक अपनाने की सलाह दी थी. पर सांसद योगी आदित्यनाथ के प्रबंधकत्व वाले महाविद्यालय ने वासंती रंग की साड़ियों और कुर्ते के रूप में गाउनों का विकल्प उतार दिया. प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव कहते हैं, ''हमारे सभी 168 स्नातक और उनके परिजन इससे बेहद खुश हैं.'' समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व पुलिस अफसर प्रकाश सिंह ने भी इस 'पहल' की तारीफ की.

—कुमार हर्ष

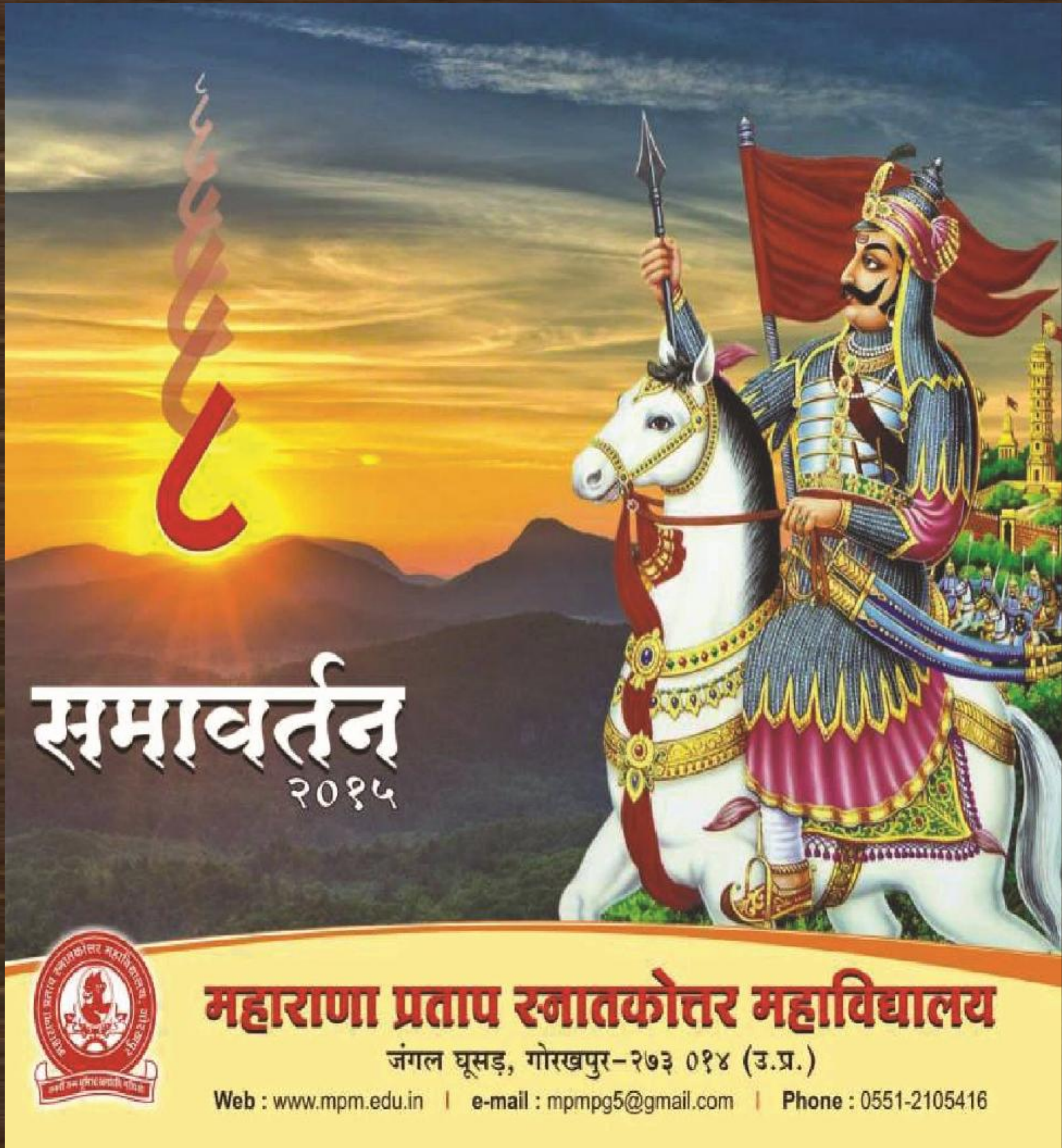

समावर्तन

समावर्तन समारोह के अवसर पर प्रतिवर्ष 'समावर्तन' नाम संस्मारिका का प्रकाशन। इस स्मारिका में पूरे सत्र के सभी कार्यक्रमों/आयोजन का उल्लेख होता है। इस यह महाविद्यालय की वार्षिक रपट भी है।

चेतक

छात्रसंघ द्वारा प्रतिमाह दीवाल–पत्रिका प्रकाशित होती है। वर्ष भर के दीवाल पत्रिका का संकलन एवं अन्य रचनाओं को छात्रसंघ ‘चेतक’ नाम से वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन करता है।

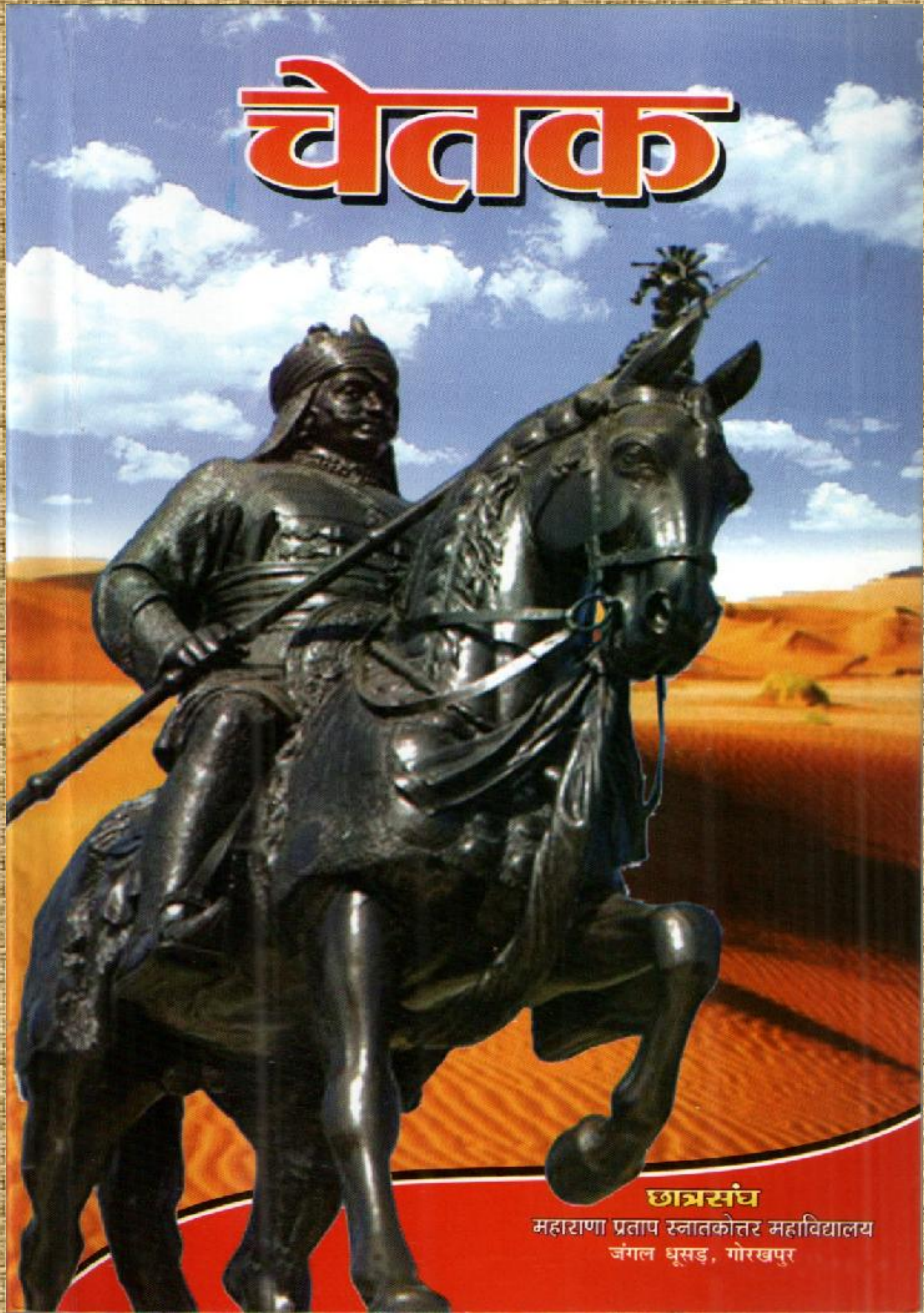

अन्य प्रकाशन

सभी कार्यशाला एवं संगोष्ठियों के कार्यवृत्त एवं शोध–पत्र प्रकाशित किया जाता है।
कार्यशाला–2008, कार्यशाला–2009,
कार्यशाला–2010, कार्यशाला–2011,
कार्यशाला–2012, कार्यशाला–2013,
कार्यशाला–2014 कार्यशाला–2015

राष्ट्रीय संगोष्ठी

'नाथपंथ एवं भक्ति आन्दोलन'
'भारतीय राष्ट्रीयता एवं सन्त परम्परा'
'भारत–नेपाल सम्बन्ध'

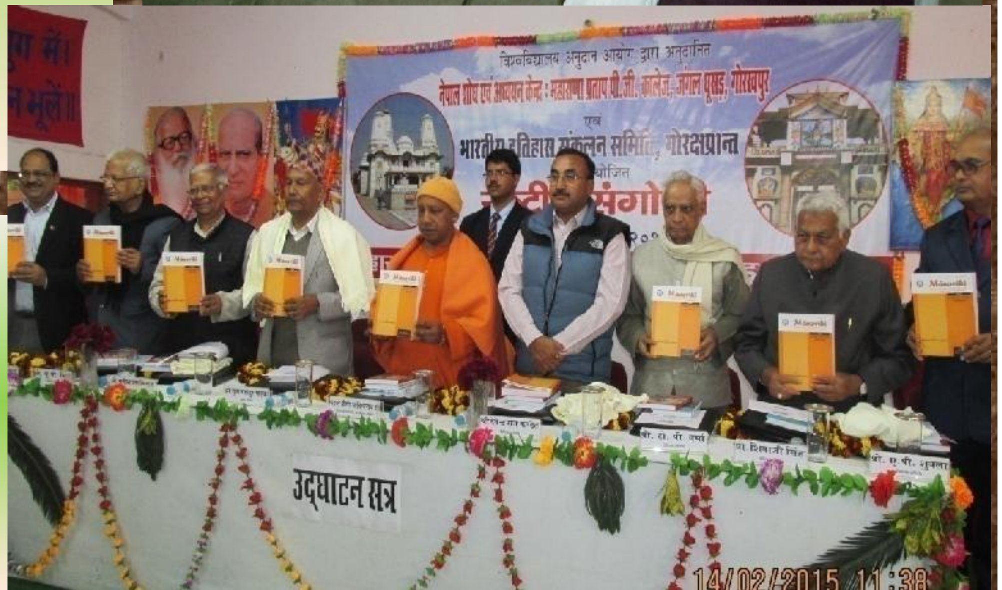

निःशुल्क कम्प्यूटर प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

महाविद्यालय में 16 जुलाई 2009 से छः माह का निःशुल्क कम्प्यूटर प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम संचालित किया जाता है। जिसमें वाणिज्य के विद्यार्थियों को वरीयता दी जाती है तथा अन्य इच्छुक विद्यार्थी सम्मिलित किये जाते हैं।

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

निःशुल्क सिलाई-कढ़ाई

ग्रामीण महिलाओं के स्वालम्बन हेतु गुरु श्रीगोरक्षनाथ सेवा संस्थान के सहयोग से राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा महाविद्यालय में ग्रामीण महिलाओं/छात्राओं के लिए छः माह का निःशुल्क सिलाई–कढ़ाई प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम संचालित किया जाता है। **30 प्रशिक्षार्थियों** का बैच चलता है। अब तक **321 ग्रामीण महिलाओं** एवं छात्राओं को यह प्रशिक्षण प्रदान किया जा चुका है।

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

हमारे महापुरुष

1 अगस्त 2013 से प्रतिसत्र छः माह का हमारे महापुरुष नाम से प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम संचालित है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य महापुरुषों से प्रेरणा लेकर वर्तमान की समस्याओं पर विद्यार्थियों की भूमिका पर चिन्तन के अवसर प्रदान करना तथा उनमें योग्य नागरिक गुणों का विकास करना है। हम इसमें सफलता की ओर अग्रसर हैं।

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

जीवन मूल्य

1 अगस्त 2013 से प्रतिसत्र छः माह का जीवन मूल्य पाठ्यक्रम संचालित किया जाता है जिसका उद्देश्य मानव जीवन के शाश्वत मूल्यों पर चर्चा–परिचर्चा, चिन्तन लेखन आदि के आधार पर समाज और राष्ट्र के लिए जीवन मूल्य सृजन करने का प्रयत्न किया जाता है।

पर्यावरण, मानवाधिकार एवं राष्ट्रगौरव पाठ्यक्रम

- महाविद्यालय में इस पाठ्यक्रम का व्यवस्थित संचालन
- सभी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य
- यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को पर्यावरण, मानवाधिकार एवं राष्ट्र के प्रति संवेदनशील बनाता है।

नि:शुल्क प्राथमिक उपचार केन्द्र

गुरु श्रीगोरक्षनाथ सेवा संस्थान एवं गुरु श्रीगोरक्षनाथ चिकित्सालय के सहयोग से 'ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ निःशुल्क प्राथमिक उपचार केन्द्र' महाविद्यालय में संचालित है। शिक्षक–कर्मचारी, छात्र–छात्राओं के अतिरिक्त गाँव की गरीब जनता को भी यह सुविधा प्रदान की जा रही है। सप्ताह में दो दिन बुधवार–बृहस्पतिवार को गुरु श्रीगोरखनाथ चिकित्सालय के चिकित्सक दवा सहित इस उपचार केन्द्र पर अपनी सेवा प्रदान करते हैं।

वे संस्थाएं - जो सहयोगी भी, सहभागी भी

- दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
- दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर
- महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय, रामदत्तपुर, गोरखपुर
- चन्द्रकान्ती रमावती आर्य महिला महाविद्यालय, गोरखपुर
- नवल्स पी.जी. कालेज, कुसम्ही, गोरखपुर
- राधिका महाविद्यालय, करवल मझगांवा, गोरखपुर
- राजेन्द्र प्रसाद–ताराचन्द महाविद्यालय, निचलौल, महराजगंज
- गो.,महन्त अवेद्यनाथ महाविद्यालय, चौक बाजार, महराजगंज
- महात्मा बुद्ध पी.जी. कालेज, रतसिया कोठी, देवरिया
- भारत नेपाल मैत्री संघ
- भारतीय इतिहास संकलन समिति
- अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्

- राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर
- पूर्वोत्तर रेलवे, पुस्तकालय, गोरखपुर
- अमर उजाला फाउण्डेशन गोरखपुर
- हिन्दुस्तान संस्थान, गोरखपुर
- गुरु श्री गोरखनाथ सेवा संस्थान, गोरखपुर
- गोरखनाथ योग प्रशिक्षण केन्द्र, गोरखपुर
- आई.टी.एम. गीडा
- महाराणा प्रताप पालीटेक्निक, गोरखपुर
- मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर
- बाबा राघवदास मेडिकल कालेज, गोरखपुर
- गुरु श्रीगोरखनाथ चिकित्सालय, गोरखपुर
- दिग्विजयनाथ आयुर्वेदिक चिकित्सालय, गोरखपुर

एक प्रयोग यह भी !

जब एक दिन महाविद्यालय विद्यार्थियों ने चलाई

- 5 सितम्बर 2009 – शिक्षक दिवस
- 4 सितम्बर को विद्यार्थियों ने शिक्षक दिवस के अवसर पर महाविद्यालय संचालित करने का निर्णय लिया।
- प्राचार्य द्वारा महाविद्यालय 5 सितम्बर को सौंप दिया गया।
- प्राचार्य और शिक्षक मूक दर्शक थे।
- प्राचार्य–वागीश राज पाण्डेय
- मुख्य नियन्ता–राजू पाण्डेय
- कक्षाध्यापन–छात्राओं द्वारा
- शाम 4.00 बजे 3 छात्रों का विषय परिवर्तन, पुस्तक आवंटन हेतु दो गरीब छात्रों का नाम, छात्रों की प्राप्त समस्याएं कार्यवाहक प्राचार्य ने प्राचार्य का सौंप दी। पूरी प्रक्रिया में 20 छात्र/छात्राएं सक्रिय सहभाग किये।
- तब से 5 सितम्बर शिक्षक दिवस महाविद्यालय इसी रूप में मनाता है।
- वागीश राज पाण्डेय आज महाविद्यालय के शिक्षक हैं।

और अन्ततः जब महाविद्यालय अपने विद्यार्थियों के हाथों सौंप दिया जायेगा

महाविद्यालय अपने इस दूरगामी लक्ष्य पर अग्रसर है कि इस महाविद्यालय से अध्ययन कर निकले विद्यार्थी ही इस महाविद्यालय को अपने **जीवन का मिशन बनायें**। इस प्रक्रिया में क्रमशः आगे बढ़ रहे हैं। हमारे महाविद्यालय के निम्न विद्यार्थी महाविद्यालय में बतौर शिक्षक कार्यरत हैं–

नाम	बैच	विभाग
श्री सुबोध कुमार मिश्र	2008	प्राचीन इतिहास विभाग
सुश्री पूनम	2009	समाजशास्त्र विभाग
श्री विनय कुमार सिंह	2010	प्राणि विज्ञान विभाग
श्री प्रतीक कुमार दास	2010	गणित विभाग
श्री वागीश राज पाण्डेय	2010	वाणिज्य विभाग
सुश्री प्रियंका मिश्रा	2011	रसायन शास्त्र विभाग
सुश्री प्रिया वर्मा	2014	राजनीतिशास्त्र विभाग